

## :: पुस्तक समीक्षा ::

### भूस्खलन एवं पर्यावरण हास

सम्पादक—डॉ० आर० ए० सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर—भूगर्भ विज्ञान विभाग

एल० एस० एम० राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़—262502, उत्तराखण्ड

प्रकाशक—ज्ञानोदय प्रकाशन, सुमित्रा सदन, मल्लीताल, नैनीताल, उत्तराखण्ड

भारतीय सनातन परम्परा में मानव जाति का उद्भव लगभग दो अरब वर्ष पूर्व माना जाता है। हरे-भरे जंगल, झर-झर बहते झरनों, कल-कल करती नदियों, कलरव करते पक्षी, वृक्ष-वनस्पति तथा विशुद्ध प्राणवायु प्रदान करने वाले वातावरण के बीच मानव ने जब अपनी आँखें खोली होंगी तब स्थिति अतीव मनोरम रही होगी। किन्तु तत्पश्चात् जैसे-जैसे मनुष्य विकास यात्रा की ओर अग्रसर हुआ और तकनीकी विकास के प्रभाव स्वरूप पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का समुचित दोहन न कर अपितु विदोहन कर औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप उस समय से वर्तमान तक पर्यावरण की स्थिति में अत्यधिक परिवर्तन आ गया।

वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व इस स्थिति की भयावहता से आक्रान्त है। विकास की अन्धाधुन्ध दौड़ के कारण पर्यावरण का हास तीव्र गति से हो रहा है। पर्यावरण और जीवन का परस्पर इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है, कि पर्यावरण के बिना समस्त प्राणीजगत् के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। स्वच्छ पर्यावरण न केवल मानव जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, अपितु देश के विकास और समृद्धि के लिए भी अति आवश्यक है।

किसी भी राष्ट्र के विकास में विभिन्न प्राकृतिक सम्पदाएँ महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। किन्तु आज जो आधुनिक मानव-समाज में इनका अति उपयोग या विदोहन हो रहा है, उससे ये सम्पदाएँ दिन-प्रतिदिन क्षीण होती जा रही हैं, जो भूस्खलन एवं भूकम्प जैसी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं तथा पर्यावरण हास जैसी समस्याओं को जन्म देती हैं। अतः यदि मानव को इन सभी समस्याओं से मुक्ति चाहिए तो प्रकृति अर्थात् पर्यावरण के साथ संवेदना पूर्वक सामंजस्य बैठाकर ऐसे सन्तुलित विकास करने की जिससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहे और मानव सहित सभी प्राणी सुख पूर्वक जीवन यापन कर सकें। वैदिक ऋषियों की भी यही दृष्टि रही है—

**“यत्ते भूमि विखानामि क्षिप्रं तदपि रोहत्तु ।**

**मा ते मर्म विमश्वरि मा ते हृदयमर्षिपम् ।।” (अथर्व०—12/1/35)**

अर्थात्—हे भूमि माता! तेरा जो कोई भाग मैं खोदूँ या लूँगा, वह उतना ही होगा, जिसे तू पुनः शीघ्र उत्पन्न कर सके। हे खोजने योग्य पृथ्वी माता ! मैं न तेरे मर्मस्थल पर या तेरी जीवनशक्ति पर कभी आघात अर्थात् चोट करूँ और न ही तेरे हृदय को हानि पहुँचाऊँ।

सम्पादक महोदय ने “भूस्खलन एवं पर्यावरण हास” नामक पुस्तक के माध्यम से सीमावर्ती जनपद पिथौरागढ़ सहित देश का सामान्य जन भी जागरूक हो और इसके ज्ञान एवं अनुभव से अधिकाधिक लाभान्वित हो सके, इस उद्देश्य से हिन्दी में लिखित इकतीस सारगर्भित एवं मौलिक लेखों को दो भागों में विभाजित कर इस पुस्तक का सम्पादन किया गया है।

**प्रथम भाग—भूस्खलन** में ग्यारह लेखों में विशेषतः हिमालयी उत्तराखण्ड राज्य एवं हिमाचल प्रदेश के परिप्रेक्ष्य में भूस्खलन एवं पर्यावरण हास की समस्या, कारण एवं निवारण के उपायों की चर्चा की गयी है तथा भूस्खलन एवं पर्यावरण विषयक शब्दों को भूवैज्ञानिक दृष्टि से परिभाषित किया गया है। भूस्खलन के सुदूर-संवेदन एवं भौगोलिक सूचना प्रणाली के द्वारा अभिमुखता, ढाल, भूस्खलन संकट, आपदा, जोखिम एवं सम्भावना मानचित्र तैयार किये गये हैं।

द्वितीय भाग—पर्यावरण ह्रास में बीस लेखों का संग्रह है। जिसमें जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, खाद्य प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, आदि की वैज्ञानिक व्याख्या के साथ-साथ इनका समाज पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाया गया है। भूस्खलन एवं पर्यावरण ह्रास के समाधान हेतु आधुनिक वैज्ञानिक विधि तथा प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा प्रदत्त समाधानों का भी विस्तार पूर्वक उल्लेख किया है।

सम्पादक महोदय ने इस पुस्तक को भारतवर्ष के सभी हिन्दी भाषी राज्यों के उन छात्र-छात्राओं की समस्याओं को ध्यान में रखकर सम्पादन किया है जो हिन्दी माध्यम से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त स्नातक स्तर पर किसी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं। जहाँ पर उन्हें हिन्दी भाषा में पुस्तकें उपलब्ध न होने के कारण विवश होकर आंग्ल भाषी पुस्तकों से पाठ्यक्रम को विवशता पूर्वक पढ़ना पड़ता है और अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जो कि सीधे तौर पर उनके मौलिक ज्ञान और परीक्षा परिणाम को प्रभावित करता है। स्नातक स्तर पर भौमिकी की पुस्तकें हिन्दी माध्यम में पाठकों को सुलभ कराने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सम्पादक की ओर से सारगर्भित लेखों का संकलन किया गया है, जो एक प्रथम एवं सराहनीय प्रयास है।

इस पुस्तक में सुधी पाठकों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनके निदान सहित लेख प्रस्तुत किये गये हैं। पुस्तक में प्रयुक्त भाषा अत्यन्त सरल, प्रचलित एवं सुबोध है तथा भूवैज्ञानिक तकनीकी शब्दावली का प्रयोग किया गया है। इसमें भूस्खलन एवं पर्यावरण ह्रास से सम्बन्धित वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तत्सम्बन्धी मानचित्रों एवं आंकड़ों का भी यथोचित उल्लेख किया गया है।

इस सन्दर्भ में मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक सभी सुधी पाठकों सहित स्नातक छात्र/छात्राओं के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं एक समीक्षक के रूप में इस पुस्तक को छात्र/छात्राओं के हित में सम्पादित भौमिकी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी मानता हूँ तथा शोधपत्र-लेखकों, सम्पादक एवं प्रकाशक को इस हेतु आभार ज्ञापित करता हूँ। मैं यह आशा भी करता हूँ कि सम्पादक एवं प्रकाशक अपने इस सुप्रयास को पाठकों एवं छात्र/छात्राओं के हित में निरन्तर भविष्य में भी जारी रखेंगे।

**समीक्षक—डॉ० मुकेश कुमार**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

एल० एस० एम० राज० स्ना० महा०

पिथौरागढ़—262502, उत्तराखण्ड